तुम कब जाओगे, अतिथि (शरद जोशी)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में शरद जोशी ने ऐसे व्यक्तियों पर व्यंग्य किया है, जो अपने किसी परिचित या रिश्तेदार के घर बिना किसी पूर्व सूचना के चले आते हैं और फिर जाने का नाम ही नहीं लेते। वे यह भी नहीं सोचते कि उनके कारण मेज़बान पर क्या गुज़र रही है। अतिथि वह अच्छा होता है, जो एक-दो दिन मेहमानी कराके विदा हो जाए। ऐसे अतिथि के विषय में ही कहा गया है–'अतिथि देवो भव।' जैसा अतिथि पाठ में दिखाया गया है, वैसा अतिथि कभी नहीं बनना चाहिए।

पाठ का सारांश

चौथे दिन अतिथि के विषय में लेखक की धारणा–लेखक के घर में अतिथि का आज चौथा दिन है। वह मन-ही-मन कहता है कि हे अतिथि, तुम्हारे सामने दीवार पर कैलेंडर टँगा है। क्या तुम्हें याद नहीं कि मेरे घर में तुम्हारा यह चौथा दिन है? अब भी तुम्हारे जाने की कोई संभावना नहीं है। मैं तुम्हारे आतिथ्य का बोझ अब और नहीं उठा सकता। लाखों मील लंबी यात्रा करके अंतरिक्ष यात्री भी इतने दिन चाँद पर नहीं रुके थे, जितने दिन छोटी-सी यात्रा करके तुम मेरे घर रुके हो। तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके हो, अब अपने घर वापस लौट जाओ।

अतिथि का आगमन एवं सत्कार–अतिथि के आगमन पर लेखक और उसकी पत्नी ने पहले दिन उसका दिल खोलकर सत्कार किया। यद्यपि उनका बजट नहीं था, लेकिन फिर भी रात के भोजन को 'डिनर' का रूप दिया गया, ताकि अतिथि अगले दिन अपने अच्छे अतिथि-सत्कार की छाप हृदय में लिए चला जाए। दो सब्ज़ियों और रायते के साथ मीठा भी बनाया गया। इस सारे उत्साह का एक ही कारण था कि कल अतिथि अवश्य चला जाएगा और हमारे रोकने से भी नहीं रुकेगा।

अतिथि द्वारा मर्यादा भंग–अतिथि दूसरे दिन भी नहीं गया, तब लेखक ने ऊपरी मन से प्रसन्नता दिखाते हुए दोपहर का लंच भी कराया और रात्रि में सिनेमा भी दिखाया। आशा यह थी कि कल तीसरे दिन तो अतिथि अवश्य ही चला जाएगा, लेकिन वह तीसरे दिन भी नहीं गया। उसने लॉण्ड्री में कपड़े धुलवाए और फिर आराम से पलंग पर लेट गया।

सौहार्द का वातावरण बोरियत में परिवर्तित–जब तीसरे दिन भी अतिथि नहीं गया तो लेखक के मुख की मुसकराहट समाप्त हो गई। अतिथि के साथ उनकी बातचीत और ठहाकों का दौर समाप्त हो गया। सौहार्द धीरे-धीरे बोरियत के वातावरण में बदल गया। भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण करने लगीं। वह सोच रहा है कि यह अतिथि पता नहीं कब जाएगा, डिनर और लंच खिचड़ी पर आ गए।

अतिथि की मानसिकता–लेखक के विचार से अतिथि को दूसरों के घर रहना अच्छा लगता है। यदि बस चले तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहने लगें, लेकिन ऐसा नहीं होता। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए घर को 'स्वीट होम' कहा गया है। अतिथि को लेखक के घर रहना बहुत अच्छा लग रहा है। लेकिन वह अब शराफ़त छोड़ने वाला है और गेट आउट कहने वाला है।

लेखक की सहनशीलता की अंतिम सुबह–लेखक को आशा है कि कल पाँचवें दिन की सुबह की पहली किरण के साथ ही अतिथि उसका घर छोड़ देगा। वह कल ससम्मान जाने का निर्णय ले लेगा। लेखक का भी कल सहनशीलता का अंतिम दिन होगा। लेखक कहता है कि अतिथि देवता होता है, लेकिन मेज़बान देवता नहीं, मनुष्य होता है। देवता और मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रह सकते। देवता दर्शन देकर लौट जाते हैं। इसलिए हे अतिथि! अब तुम लौट जाओ।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) तुम जहाँ बैठे निस्संकोच सिगरेट का धुआँ फेंक रहे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो न। इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं। विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ। तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है, तुम्हारे सतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनाट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो। तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली; तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके। अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात् हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती?

1. अतिथि बैठा हुआ निस्संकोच क्या कर रहा है–

(क) अखबार पढ़ रहा है (ख) टी०वी० देख रहा है
(ग) सिगरेट पी रहा है (घ) रेडियो पर गीत सुन रहा है।

2. अतिथि के ठीक सामने क्या है–

(क) पेंटिंग (ख) कैलेंडर
(ग) रसोईघर (घ) पूजा-गृह

3. अतिथि के आतिथ्य का आज कौन-सा दिन है–

(क) दूसरा (ख) तीसरा
(ग) चौथा (घ) पाँचवाँ।

4. लेखक अतिथि को दिखाकर कैलेंडर की तारीखें क्यों बदल रहा है–

(क) ताकि अतिथि तारीखें बदलना सीख जाए
(ख) ताकि अतिथि कैलेंडर देखना सीख जाए
(ग) ताकि अतिथि लेखक के घर ठहरने के दिनों का हिसाब लगा सके
(घ) ताकि अतिथि का मनोरंजन हो सके।

5. लेखक के अनुसार अतिथि अब तक क्या कर चुका है–

(क) वह लेखक से अंतरंग निजी संबंध स्थापित कर चुका है
(ख) उसने लेखक की आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली है
(ग) वह लेखक की काफ़ी मिट्टी खोद चुका है
(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)।

(2) उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था। अंदर-ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुसकराहट के साथ मैं तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते की थी। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्ज़ियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी। आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमाननवाज़ी की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुसकान लिए घर में ही बने रहे। हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे।

1. लेखक का हृदय किस कारण धड़क उठा–

(क) डर के कारण (ख) अज्ञात आशंका के कारण
(ग) खुशी के कारण (घ) लालच के कारण।

2. अतिथि के आने से कौन काँप गया–

(क) लेखक (ख) लेखक की पत्नी
(ग) लेखक का बटुआ (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. लेखक ने रात के भोजन को किसमें बदल दिया–

(क) डिनर में (ख) लंच में
(ग) जल-पान में (घ) उपवास में।

4. अतिथि सत्कार के उत्साह और लगन के मूल में कौन-सी आशा थी–

(क) अतिथि प्रसन्न हो जाएगा। (ख) अतिथि आशीर्वाद देगा।
(ग) अतिथि दूसरे दिन चला जाएगा। (घ) अतिथि फिर आएगा।

5. लेखक की अज्ञात आंशका क्या हो सकती है–

(क) अतिथि कल ही न चला जाए
(ख) अतिथि अधिक दिनों तक न ठहर जाए
(ग) अतिथि अधिक न खा ले
(घ) अतिथि कुछ चुरा न ले जाए।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख)।

(3) और आशंका निर्मूल नहीं थी, अतिथि! तुम जा नहीं रहे। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो। तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। तुम्हें देखकर फूट पड़नेवाली मुसकराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारें, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते। बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोनलों से टप्पे खाकर फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है। अब इसे न तुम हिला रहे हो, न मैं। कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो। शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए।

1. लेखक की आशंका निर्मूल क्यों नहीं थी–

(क) क्योंकि अतिथि जा नहीं रहा है
(ख) क्योंकि अतिथि खा नहीं रहा है
(ग) क्योंकि अतिथि सो नहीं रहा है
(घ) क्योंकि अतिथि बोल नहीं रहा है।

2. अतिथि को देखकर फूट पड़नेवाली लेखक की मुसकराहट कैसी हो गई–

(क) गहरी हो गई (ख) लुप्त हो गई
(ग) खिल गई (घ) व्यंग्यात्मक हो गई।

3. कल तक कमरे के आकाश में उड़ने वाले ठहाकों के गुब्बारे कैसे थे–

(क) सफ़ेद (ख) रंगीन
(ग) पारदर्शी (घ) गंदे।

4. लेखक ने अपने और अतिथि के मध्य होने वाली बातचीत की तुलना किससे की है–

(क) खिलौने से (ख) पक्षी से
(ग) गेंद से (घ) पहिए से।

5. कल से लेखक क्या पढ़ रहा है–

(क) उपन्यास (ख) कहानी
(ग) रामायण (घ) महाभारत।

(4) अपने खर्राटों से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी। आशा है, वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे। मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं स्टैंड नहीं कर सकूँगा ओर लड़खड़ा जाऊँगा। मेरे अतिथि, मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ। मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं। एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। तुम लौट जाओ अतिथि! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा। यह मनुष्य अपनी वाली पर उतरे, उसके पूर्व तुम लौट जाओ!

1. कल अतिथि का लेखक के घर ठहरने का कौन-सा दिन होगा–

(क) दूसरा (ख) तीसरा
(ग) चौथा (घ) पाँचवाँ।

2. कल के विषय में अतिथि को लेकर लेखक को क्या आशा है–

(क) अतिथि कल घर लौटने का निर्णय ले लेगा
(ख) अतिथि कल भोजन नहीं करेगा
(ग) अतिथि कल मौन रखेगा
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

3. कल की सुबह लेखक की सहनशीलता की कौन-सी सुबह होगी–

(क) पहली (ख) अंतिम
(ग) दूसरी (घ) तीसरी

4. लेखक के अनुसार कौन अधिक देर साथ नहीं रहते –

(क) देवता और दानव (ख) भक्त और भगवान
(ग) मनुष्य और देवता (घ) गुरु और शिष्य।

5. लेखक जानता है कि–

(क) अतिथि देवता होता है (ख) अतिथि क्रूर होता है
(ग) अतिथि दानव होता है (घ) अतिथि सज्जन होता है।

उत्तर– 1. (घ) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (क)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ के लेखक का क्या नाम है–

(क) रामविलास शर्मा (ख) यशपाल
(ग) शरद जोशी (घ) धीरंजन मालवे।

2. अच्छा अतिथि कौन होता है–

(क) जो अपने आने की पूर्व सूचना देता है
(ख) जो एक-दो दिन ठहर कर विदा हो जाता है
(ग) जिसके आने से आतिथेय को कोई कष्ट नहीं होता
(घ) उपर्युक्त सभी।

3. अतिथि के आगमन के कौन-से दिन लेखक के मन में यह प्रश्न आया–'तुम कब जाओगे, अतिथि?'

(क) दूसरे दिन (ख) तीसरे दिन
(ग) चौथे दिन (घ) पाँचवें दिन।

4. लेखक अतिथि को उसके सामने स्थित कौन-सी चीज़ दिखाना चाहता है–

(क) घड़ी (ख) तस्वीर
(ग) कैलेंडर (घ) बोतल।

5. दो दिन से कैलेंडर दिखाकर तारीख़ बदलने से लेखक क्या दर्शाना चाह रहा है–

(क) बही सोच इनसान को बड़ा बनने की प्रेरणा देती है
(ख) आगमन के चौथे दिन का संकेत देने के लिए
(ग) तारीखों का सीमा में नम्रता से फड़फड़ाना लेखक को पसंद नहीं आता

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

6. **जिस दिन अतिथि आया, उस दिन लेखक के हृदय की क्या दशा हुई–**
   (क) उसका हृदय आशंका से धड़क उठा
   (ख) उसका हृदय गद्‌गद हो गया
   (ग) उसका हृदय ग्लानि से भर गया
   (घ) उसका हृदय उदास हो गया।
7. **'अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।'– यहाँ बटुआ किसका प्रतीक है–**
   (क) आर्थिक स्थिति का (ख) फ़ैशन का
   (ग) सुरक्षा का (घ) गरीबी का।
8. **लेखक ने अतिथि का स्वागत कैसे किया–**
   (क) चरण स्पर्श करके
   (ख) नमस्ते करके
   (ग) मुसकराहट के साथ गले मिलकर
   (घ) माला पहनाकर।
9. **अतिथि द्‌वारा लेखक के घर तक पहुँचने में लगे समय की तुलना किस उपमेय से की जा रही है–**
   (क) धरती से अंतरिक्ष तक की दूरी से
   (ख) चाँद पर मनुष्य/एस्ट्रोनॉट्स के रुकने के समय से
   (ग) धरती से चाँद तक की दूरी से
   (घ) एस्ट्रोनॉट्स द्‌वारा चाँद तक जाने में लगे समय से।
10. **लेखक की पत्नी ने अतिथि का स्वागत कैसे किया–**
   (क) चरणस्पर्श करके (ख) सादर नमस्ते करके
   (ग) उपहार भेंट करके (घ) इनमें से कोई नहीं।
11. **पहले दिन रात को डिनर में अतिथि के लिए क्या बनाया गया–**
   (क) दो सब्ज़ियाँ (ख) रायता
   (ग) मीठा (घ) ये सभी।
12. **पहले दिन लेखक ने अतिथि के सत्कार में, जो उत्साह और लगन दिखाई, उसके मूल में क्या कारण था–**
   (क) अतिथि को देवता मानना
   (ख) अतिथि के कल ही चले जाने की आशा
   (ग) प्रदर्शन की प्रवृत्ति
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
13. **लेखक के लिए किसी भी अतिथि के सत्कार का आखिरी छोर कौन-सा दिन है–**
   (क) पहला दिन (ख) दूसरा दिन
   (ग) तीसरा दिन (घ) चौथा दिन।
14. **तीसरे दिन की सुबह अतिथि ने क्या कहा–**
   (क) घूमने जाने के लिए (ख) सिनेमा देखने के लिए
   (ग) धोबी को कपड़े देने के लिए (घ) चाय पीने के लिए।
15. **लेखक के लिए अप्रत्याशित आघात क्या था–**
   (क) अतिथि का आगमन
   (ख) दूसरे दिन भी अतिथि का न जाना
   (ग) तीसरे दिन अतिथि का धोबी को कपड़े देने की बात कहना
   (घ) अतिथि का चौथे दिन भी न जाना।
16. **लेखक की पत्नी ने प्रश्नात्मक दृष्टि से लेखक की ओर कब देखा–**
   (क) जब अतिथि ने धोबी को कपड़े देने का प्रस्ताव रखा
   (ख) जब अतिथि ने सिनेमा देखने जाने का प्रस्ताव रखा
   (ग) जब अतिथि ने मनपसंद व्यंजन बनाने की बात की
   (घ) जब अतिथि ने घर जाने की बात की।
17. **लेखक डिनर से चलकर खिचड़ी पर क्यों आ गया–**
   (क) क्योंकि अतिथि खिचड़ी खाना चाहता था
   (ख) क्योंकि सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई थी
   (ग) क्योंकि लेखक का बटुआ खाली हो गया था
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
18. **जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया–**
   (क) उसकी मुसकराहट लुप्त हो गई
   (ख) सौहार्द बोरियत में बदल गया
   (ग) डिनर और लंच का स्थान खिचड़ी ने ले लिया
   (घ) उपर्युक्त सभी।
19. **लेखक और अतिथि के बीच किन-किन विषयों पर चर्चा हुई–**
   (क) परिवार, बच्चे, नौकरी
   (ख) फ़िल्म, राजनीति, रिश्तेदार
   (ग) परिवार-नियोजन, महँगाई, पुरानी प्रेमिकाएँ
   (घ) उपर्युक्त सभी।
20. **जब अतिथि जाने का नाम नहीं ले रहा था, तब लेखक के मन में उसके लिए क्या बात आई–**
   (क) अतिथि से जाने के लिए प्रार्थना करने की
   (ख) अतिथि का और अधिक सत्कार करने की
   (ग) अतिथि को 'गेट आउट' कहने की
   (घ) अतिथि से बातचीत न करने की।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (ग) **9.** (ख) **10.** (ख) **11.** (घ) **12.** (ख) **13.** (ख) **14.** (ग) **15.** (ग) **16.** (क) **17.** (ख) **18.** (घ) **19.** (घ) **20.** (ग)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : एक अच्छे अतिथि की क्या विशेषता होती है?

उत्तर : एक अच्छा अतिथि वह होता है, जो देवता की तरह बहुत कम समय ठहरता है। वह 'अतिथि देवो भव' की उक्ति को चरितार्थ करता है। अच्छा अतिथि एक दिन ठहरकर अगली सुबह चला जाता है और रुकने का आग्रह करने पर भी नहीं रुकता।

प्रश्न 2 : अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा था?

उत्तर : अतिथि लेखक के घर पर विगत तीन दिनों से रह रहा था। आज उसके आगमन का चौथा दिन है।

प्रश्न 3 : यह जानते हुए भी कि अतिथि देवता होता है, लेखक क्यों चाहता है कि अतिथि लौट जाए?

उत्तर : हमारी संस्कृति में 'अतिथि देवो भव' कहा गया है। लेखक भी इस बात को जानता और मानता है। इसीलिए वह दिल खोलकर अतिथि का सत्कार करता है। वह यह भी जानता है कि देवता कहीं अधिक देर तक नहीं रुकते। वे दर्शन देकर चले जाते हैं। एक अच्छा अतिथि भी अधिक समय नहीं टिकता, लेकिन लेखक का अतिथि चार दिन से टिका हुआ है। इससे वह लेखक पर बोझ बन गया है। इसीलिए वह चाहता है कि अतिथि अब लौट जाए।

प्रश्न 4 : अतिथि के आगमन पर लेखक का हृदय किस अज्ञात आशंका से धड़क उठा था?

उत्तर : अतिथि के आगमन पर लेखक का हृदय इस अज्ञात आशंका से धड़क उठा था कि यदि अतिथि अधिक दिनों तक रुक गया तो उसकी आर्थिक स्थिति उसके आतिथ्य-सत्कार से डगमगा जाएगी।

प्रश्न 5 : पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?

उत्तर : पति मुसकराहट के साथ मेहमान से गले मिला और पत्नी ने हाथ जोड़कर सादर नमस्ते की। अतिथि के सत्कार में रात्रि के भोजन को उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर का रूप दिया गया, जिसमें दो सब्ज़ियों और रायते के साथ मीठा भी बनाया गया।

प्रश्न 6 : लेखक के द्‌वारा किए गए अतिथि-सत्कार के उत्साह के मूल में क्या आशा थी?

उत्तर : लेखक द्‌वारा किए गए अतिथि-सत्कार के उत्साह के मूल में यह आशा थी कि कल किसी एक रेल से शानदार मेहमानवाज़ी की छाप हृदय में लेकर अतिथि अवश्य चला जाएगा। वह अतिथि से रुकने का आग्रह करेगा, लेकिन वह नहीं मानेगा और चला ही जाएगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 7 : सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने का क्या आशय है?

उत्तर : मेज़बान के अतिथि के सत्कार में एक उत्साह और प्रसन्नता होती है। यदि अतिथि ज़बरदस्ती गले पड़ जाए और जाने का नाम ही न ले तो मेज़बान का अतिथि-सत्कार का वह उत्साह समाप्त हो जाता है। इसी को लेखक ने 'सत्कार की ऊष्मा समाप्त होना' कहा है।

प्रश्न 8 : दूसरे दिन लेखक ने अतिथि-सत्कार किस प्रकार किया?

उत्तर : दूसरे दिन भी अतिथि अपनी सहज मुसकान लिए लेखक के घर में ही बना रहा। लेखक ने अपनी पीड़ा पी ली और स्वयं को प्रसन्न बनाए रखा। दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की गई। रात्रि में अतिथि को सिनेमा भी दिखाया। इस प्रकार दूसरे दिन वह अपने सत्कार करने के अंतिम छोर तक पहुँच गया।

प्रश्न 9 : पत्नी की बड़ी आँखों का लेखक पर क्या अलग-अलग प्रभाव पड़ा?

उत्तर : विवाह-पूर्व अपने प्रति स्नेह, उत्साह और विस्मय के कारण एकाएक फैलकर बड़ी हुई पत्नी की आँखें देखकर लेखक को उससे प्यार हो गया था और उन्होंने उसके साथ विवाह कर लिया था। आज जब पत्नी को पता चला कि अतिथि तीसरे दिन भी नहीं जा रहा है तो उसकी आँखें इस भय और आशंका से विवाह से पहले की तरह एकाएक बड़ी हो गई थीं कि अतिथि अधिक दिनों तक ठहरेगा, लेकिन आज लेखक को वे बड़ी आँखें देखकर उन पर प्यार नहीं आया, बल्कि उसका मन छोटा हो गया।

प्रश्न 10 : लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?

उत्तर : लेखक अतिथि को भावभीनी विदाई देना चाहता था। वह चाहता था कि वह अतिथि से रुकने का आग्रह करेगा, लेकिन वह उसका आग्रह न मानकर अच्छे अतिथि की तरह चला जाएगा। वह अपने अतिथि के सम्मान में उसको स्टेशन तक विदा करने के लिए जाना चाहता था।

प्रश्न 11 : होम को स्वीट-होम क्यों कहा गया है?

उत्तर : लेखक का विचार है कि लोगों को दूसरों के घर रहना और अतिथि-सत्कार करवाना अच्छा लगता है। लेकिन इससे दूसरों के घर की स्वीटनेस (सुख-शांति) नष्ट होती है। इस समस्या से बचने के लिए अपने घर को स्वीट-होम अर्थात् सबसे प्यारा घर कहा गया है। ऐसा कहकर अपने घर की महत्ता सिद्ध की गई है, ताकि लोग दूसरों के घर न रहकर अपने घर रहें और वहीं अधिक सुख-शांति का अनुभव करें।

प्रश्न 12 : 'अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।' इस पंक्ति के द्वारा लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर : इस पंक्ति में लेखक ने अपनी आर्थिक स्थिति पर व्यंग्य किया है। लेखक एक मध्यमवर्गीय व्यक्ति है। उसकी आय सीमित है। बटुआ काँपने का आशय है– घर का बजट गड़बड़ाने से आर्थिक स्थिति खराब हो जाना। अतिथि के आने से सीमित आय वाले व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता है, उसका बजट बिगड़ जाता है। इसीलिए अतिथि के आने से लेखक आर्थिक दबाव बढ़ने के भय से विचलित हो गया।

प्रश्न 13 : कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : तीसरे दिन लेखक को अप्रत्याशित आघात लगा, जब अतिथि ने सुबह कहा कि वह धोबी को कपड़े देना चाहता है। इस आघात की चोट मार्मिक थी; क्योंकि लेखक तो उम्मीद लगाए बैठा था कि अतिथि सुबह विदा माँगेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। धोबी को कपड़े देने का अर्थ था कि अतिथि आज भी नहीं जाएगा। इससे दोनों के बीच का सौहार्द बोरियत में बदल गया और लेखक की सद्भावनाएँ गालियों में बदलने लगीं।

प्रश्न 14 : 'अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।' —पंक्ति में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

किया है। जब अतिथि ने चार दिन तक लेखक के यहाँ रुकने के बाद भी जाने का नाम नहीं लिया, तो लेखक के मन से 'अतिथि देवो भव' का भाव गायब होने लगा। उसकी सहनशीलता समाप्त होने लगी। उसे प्रतीत होने लगा कि अतिथि, जिसे पुराणों में 'देवता' कहा गया है, जब अपने अतिथि होने का भाव त्याग दे तो वह राक्षसतुल्य हो जाता है। ऐसे अतिथि का कोई सम्मान नहीं होता।

प्रश्न 15 : सौहार्द बोरियत में कैसे परिवर्तित हो गया? 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर : अतिथि और आतिथेय के बीच सौहार्दपूर्वक बातचीत के विषय होते हैं–परिवार, समाज, राजनीति, फ़िल्म, नौकरी, बच्चे, रिश्तेदारी, पुराने दोस्त, महँगाई आदि। अतिथि, लेखक के घर पिछले चार दिन से टिका है। बातचीत के सभी विषय समाप्त हो चुके हैं। लेखक के मन में अतिथि के प्रति क्रोध है। दोनों ने परस्पर बातें करना बंद कर दिया है; इसलिए सौहार्द बोरियत में परिवर्तित हो गया है।

प्रश्न 16 : 'लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें।'–आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : खुशहाल घर को प्रायः 'स्वीट-होम' कहा जाता है। लेखक के घर आया अतिथि चार दिनों से लेखक के घर का बजट बिगाड़ रहा था और जाने का नाम नहीं ले रहा था। इससे लेखक और उसका परिवार मानसिक क्लेश में जी रहा था। उसके परिवार का खुशनुमा वातावरण गायब हो चुका था। लेखक इसी दबाव में कहता है कि किसी को अधिकार नहीं है कि वह किसी परिवार के खुशनुमा वातावरण को हानि पहुँचाए।

प्रश्न 17 : जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर : जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में निम्नलिखित परिवर्तन आए–

(i) अतिथि के आने से उसके चेहरे पर जो मुसकराहट आई थी, वह लुप्त हो गई।

(ii) पहले-दूसरे दिन अतिथि के साथ जो ठहाके लग रहे थे वे समाप्त हो गए तथा बातचीत का सिलसिला भी बंद हो गया।

(iii) सौहार्द धीरे-धीरे बोरियत के माहौल में बदल गया।

(iv) डीनर और लंच का स्थान खिचड़ी ने ले लिया।

(v) सद्भावनाएँ गालियों के रूप में बदल गईं।

प्रश्न 18 : 'मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।' लेखक ऐसा क्यों सोचता है?

उत्तर : लेखक के घर अतिथि चार दिनों से टिका हुआ है। वह घर से जाने का संकेत भी नहीं करता। वह चार दिनों से लेखक की दैनिक दिनचर्या में बाधा बना हुआ है। लेखक न केवल आर्थिक, बल्कि मानसिक दबाव से भी गुज़र रहा है। लेखक सोचता है कि यदि अतिथि पाँचवें दिन भी उसके यहाँ रुका तो वह बर्दाश्त नहीं कर पाएगा और अपनी आतिथ्य मर्यादा भूल जाएगा।

प्रश्न 19 : 'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुज़रना'–इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

उत्तर : उपभोक्तावादी संस्कृति में संबंध नए दौर से गुज़र रहे हैं। शहरी जीवन में संबंधों की चमक फीकी पड़ती जा रही है। 'अतिथि देवो भव' की संस्कृति अतिथि के एक दिन से अधिक ठहरने पर 'अतिथि राक्षस भव' में बदलने लगती है। एक-दूसरे की आर्थिक एवं सामाजिक हैसियत का सम्मान करते हुए ही संबंधों को निभाया जा सकता है।

आज का जीवन भागम-भाग और रोज़ी-रोटी कमाने में ही बीत जाता है। ऐसे समय में किसी के अतिथि-सत्कार का अतिरिक्त आर्थिक दबाव व्यक्ति के संबंधों को बिगाड़ने लगता है। इसी को

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 20 : 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ में लेखक और उसकी पत्नी भारतीय परंपरा के अनुसार, अतिथि का बढ़-चढ़कर स्वागत-सत्कार करते हैं। उन्हें लगता है कि अतिथि सम्मान-सत्कार की स्मृतियाँ लेकर अगले दिन लौट जाएगा, लेकिन अतिथि तो जाने के लिए तैयार ही नहीं था। आज की महँगाई के समय में सीमित आय वाले लोग अधिक दिनों तक अतिथि का स्वागत-सत्कार नहीं कर सकते। लेखक ने कई प्रकार के उदाहरणों, कार्यों द्वारा अतिथि को चले जाने का संकेत दिया था, फिर भी अतिथि को फर्क नहीं पड़ा। लेखक के घर उपवास की नौबत आने लगी थी। प्रेम संबंधों में खटास उत्पन्न होने लगी थी। अतिथि लेखक को मानव नहीं, राक्षस का प्रतिरूप दिखने लगा था। अब केवल एक ही रास्ता बचा था कि लेखक भी सभ्यता का आवरण उतारकर अतिथि को सीधे जाने के लिए कह दे।

प्रश्न 21 : हमारी संस्कृति में अतिथि को देवता माना है, लेकिन लेखक उसे राक्षस कहता है। क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : हमारी संस्कृति में अतिथि को देवता माना गया है, इसलिए लोग अतिथि का सत्कार खूब जी खोलकर करते हैं। लेखक ने अतिथि को देवता इसलिए नहीं माना है; क्योंकि देवता तो कुछ समय के लिए ही आते हैं, और खुशियों-कृपा प्रदान करके प्रसन्न होकर आशीर्वाद देकर चले जाते हैं। जब हम उन्हें बुलाने के लिए पुनः आग्रह करते हैं तो वे फिर आ जाते हैं, पर लेखक के घर आया अतिथि राक्षस की भाँति बिना बुलाए आया और ज़बरदस्ती रहकर घर की सारी खुशियाँ, मधुरता एवं शांति निगलने लगा, इसलिए लेखक उसे राक्षस कहता है। अतिथि बड़े मज़े से लेखक के घर में रहकर स्वादिष्ट भोजन कर रहा है। वह बैठे-बैठे सिगरेट के छल्ले उड़ाता है और रात को खर्राटे मारकर सोता है। उसे घर के सदस्यों के सुख-दुःख की कोई चिंता नहीं है। वह लेखक के लिए एक बोझ बन गया है, जिसके कारण लेखक के घर का वातावरण बोझिल एवं उबाऊ हो गया है।

प्रश्न 22 : जब तीसरे दिन भी अतिथि नहीं गया तो लेखक और उसके बीच सौहार्द बोरियत में बदल गया। उस बोरियत के वातावरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर : जब तीसरे दिन भी अतिथि नहीं गया तो अतिथि को देखकर फूट पड़ने वाली लेखक की मुसकराहट लुप्त हो गई। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे अब दिखाई नहीं देते। बातचीत की उछलती गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कानों से टप्पे खाकर सेंटर में चुपचाप पड़ी है। लेखक उपन्यास पढ़ रहा है तो अतिथि फ़िल्मी, पत्रिका। शब्दों का परस्पर लेन-देन बंद हो चुका है। परिवार, बच्चे, नौकरी, फ़िल्म, राजनीति, रिश्तेदारी तबादले, पुराने-दोस्त, परिवार-नियोजन, महँगाई, साहित्य, पुरानी प्रेमिकाओं आदि पर होने वाली चर्चा बंद हो चुकी है। घर में अब केवल एक चुप्पी है। सौहार्द का वातावरण बोरियत में बदल चुका है। भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं।

प्रश्न 23 : 'तुम्हारे सामीप्य की बेला एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यह पंक्ति लेखक ने तब कही, जब अतिथि को उसके घर में आए हुए तीसरा दिन हो गया। इसका आशय यह है कि अतिथि के आने के बाद लेखक को लगा था कि वह एक दिन रुककर चला जाएगा। एक दिन में न सही, दो दिन बाद तो वह अवश्य चला जाएगा। ऐसा लेखक को विश्वास था। इसी आशा में लेखक अतिथि का बढ़िया-से-बढ़िया सत्कार करना चाहता है, लेकिन जब अतिथि ने अपने गंदे कपड़ों को धोबी से धुलवाने की इच्छा व्यक्त की तो लेखक को गहरा झटका लगा। उसे जब लगने लगा कि उसके यहाँ आया अतिथि अभी वापस जाने की जल्दी में नहीं है। उसका इरादा यहाँ लंबे समय तक रुकने का है। इसी संदर्भ में लेखक ने उसके सामीप्य को रबर की तरह खिंच जाने के रूप में व्यंजित किया है। यह व्यंग्यात्मक लहजा है और इससे लेखक की अतिथि के प्रति अन्यमनस्कता अर्थात् अरुचि प्रकट होती है।

प्रश्न 24 : लेखक अच्छा आतिथेय है। सिद्ध कीजिए।

उत्तर : 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ के आधार पर हम कह सकते हैं कि लेखक एक अच्छा आतिथेय है। वह बिना बुलाए मेहमान का गर्मजोशी से स्वागत करता है और उससे गले मिलता है। उसके सत्कार में वह शाम के भोजन को एक अच्छे डिनर में परिवर्तित कर देता है, जिसमें दो सब्ज़ियाँ, रायता और मीठा भी होता है। अगले दिन भी वह मेहमान को अच्छा लंच कराता है, सिनेमा दिखाता है और उसके साथ खूब बातें करता है। ये सभी एक अच्छे आतिथेय के लक्षण हैं। यद्यपि जब अतिथि को चार दिन उसके घर में टिके हुए हो जाते हैं और वह फिर भी जाने का नाम नहीं लेता तो लेखक उसे मन-ही-मन कोसता है। इसमें उसका दोष नहीं है; क्योंकि किसी भी मेहमान का इतने दिन किसी के घर में टिकना अच्छा नहीं है। ऐसे में कोई भी व्यक्ति हो, वह ऐसा ही करेगा। लेखक ने तो फिर भी बहुत सहन किया और मन में आए आक्रोश को अतिथि के सामने प्रकट नहीं किया। इससे भी उसके अच्छे आतिथेय होने का परिचय मिलता है।

प्रश्न 25 : 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : लेखक शरद जोशी ने इस पाठ के माध्यम से संदेश दिया है कि अगर किसी के घर अतिथि बनकर जाओ तो अतिथि बनकर लौट भी जाओ। अधिक दिनों तक रहने की आवश्यकता नहीं है। न ही किसी के घर की शांति भंग करो; न ही किसी के 'स्वीट होम' की स्वीटनेस छीनो। अपनी इज़्ज़त अपने ही हाथों में है, इसलिए इसे बनाकर रखे। ऐसा न हो कि तुम्हारे वहाँ अधिक दिनों तक ठहरने से तुम मेज़बान की आँखों में खटकने लग जाओ।

प्रश्न 26 : 'अतिथि देवो भव' उक्ति की व्याख्या पर आधुनिक युग के संदर्भ में इसका आकलन प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : भारतीय संस्कृति की यह परंपरा रही है कि सदियों से ही 'अतिथि' को देवता माना जाता है; जैसे–'अतिथि देवो भव', लेकिन हम सभी जानते हैं कि समय परिवर्तनशील है; सदा एक-सा नहीं रहता है, विकास और प्रगति के साथ-साथ लोगों के विचार भी बदल गए हैं। आज अतिथि 'देवता' नहीं 'बोझ' समझा जाता है। इस परिवर्तन के पीछे अनेक कारण हैं–परिस्थितियाँ मनुष्य को ऐसा करने पर कई बार विवश कर देती हैं। अधिकतर लोग फ्लैट्स में या छोटे घरों में रहते हैं। इन घरों में वे अपना निर्वाह ही कठिनाई से कर पाते हैं। ऐसे में अतिथि को ठहराने में स्थानाभाव हो जाता है। कुछ लोगों की आर्थिक दशा उन्हें 'आतिथ्य' नहीं निभाने देती है। उन्हें लगता कि मेहमान के आ जाने से घर का बजट बिगड़ जाएगा। खर्चा बढ़ जाएगा, तो वे मेहमानों से दूर भागते हैं। परंतु इसके पीछे जो सबसे बड़ा कारण है–वह है लोगों का स्वार्थ। लोग स्वार्थी हो गए हैं, किसी को दो वक्त खाना नहीं खिलाना चाहते; खुद बड़े-बड़े होटलों में खाते हैं लाखों रुपये अपने पर खर्च करते हैं। समय के बदलाव के साथ अतिथि के स्वभाव में भी बदलाव आया है। हर किसी को दूसरे के घर परेशानी असुविधा का सामना करना पड़ता है। कोई किसी कारण परेशान नहीं होना चाहिए। कई लोगों को दूसरों के घर नींद ही नहीं आती, वे अपने ही घर में वापस जाना चाहते हैं। इसलिए 'अतिथि देवो भव' का औचित्य समाप्त होता जा रहा है।

प्रश्न 27 : वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए स्पष्ट कीजिए कि आप कैसे अतिथि बनना पसंद करेंगे और क्यों?

उत्तर : वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हम 'अतिथि देवो भव' उक्ति की गरिमा को बनाए रखना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पसंद करेंगे यानि हम ऐसे अतिथि बनेंगे, जो देवता स्वरूप आएगा और दर्शन देकर चला जाएगा। हम अपनी सुविधा के साथ-साथ मेज़बान की सुविधा का भी पूरा ध्यान रखेंगे। किसी के घर की शांति को भंग करने का प्रयास कभी नहीं करेंगे। आज के समय में इतनी महँगाई है कि हर व्यक्ति के लिए अपना खर्च चलाना ही कठिन होता है, ऐसे में यदि हम मेहमान बनकर उसके घर अधिक दिन रहेंगे तो उसे आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। बल्कि हम तो यह सोचते हैं कि यदि किसी के घर अतिथि बनेंगे तो घर के कामों में हाथ बँटाकर उनके बोझ को कम करेंगे। यदि संभव हुआ तो सब्ज़ी, फल इत्यादि खरीदकर उसे आर्थिक सहायता भी पहुँचा सकते हैं। हम अतिथि बनकर उसके स्वीट होम की 'स्वीटनेस' को कभी नहीं छीनेंगे। बेहतर तो यही होगा कि हम ज़्यादा दिन मेज़बान के घर नहीं रुकेंगे। यही आज के समय की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति को इसी प्रकार विचार करना चाहिए।

प्रश्न 28 : लेखक ने अतिथि को जाने का संकेत किन-किन उपायों से दिया?

उत्तर : लेखक ने अतिथि को जाने का संकेत देने के लिए कई उपाय किए। उसने अतिथि के सामने रोज़-रोज़ तारीखें बदलीं। तारीख बदलते समय इस बात को दोहराया कि आज यह तारीख हो चुकी। ऐसा करके वह अतिथि को जाने की याद कराना चाहता था। फिर उसने धोबी को कपड़े देने की बजाय लॉण्ड्री में देने का सुझाव दिया, ताकि कपड़े जल्दी धुल सकें। 'जल्दी धुल सकें' वाक्य में भी यह संकेत था कि तुम्हें यहाँ से जल्दी चले जाना चाहिए। इसके बाद लेखक ने मुसकराना और बातचीत करना बंद कर दिया। यह भी साफ संकेत था कि अब अतिथि को वहाँ से चले जाना चाहिए। उसे अब और सहना बस की बात नहीं रही। परंतु ढीठ अतिथि के सामने सब उपाय फ़ीके होते पड़ते गए।

प्रश्न 29 : घर की स्वीटनेस कब समाप्त हो जाती है?

उत्तर : घर की स्वीटनेस अर्थात् पारिवारिकता की मिठास तब समाप्त हो जाती है, जब कोई बाहर का अतिथि दाल-भात में मूसलचंद बनकर बीच में आए। बाहर के आदमी के आ जाने से मनुष्य को घर-घर नहीं लगता। वह आराम से नहीं रह पाता। उसे औपचारिक होना पड़ता है। जानबूझकर शिष्टता का दिखावा करना पड़ता है। खुलकर हँसना भी कठिन हो जाता है।

हर घर के अंदर एक खास तरह का आत्मीय वातावरण होता है, जिससे घर के सभी सदस्य परिचित होते हैं। उनमें एक प्रकार का खुलापन होता है। वे अपनी खूबियों और कमज़ोरियों को अपने लोगों के सिवा और किसी को नहीं बताना चाहते। बाहर से आए अतिथि के कारण उनका वही खुलापन नष्ट हो जाता है। उनकी आपसी आत्मीयता और स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

तुम जहाँ बैठे निस्संकोच सिगरेट का धुआँ फेंक रहे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो न। इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं। विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ। तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है, तुम्हारे सतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनाट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो। तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली; तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके। अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात् हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती?

1. अतिथि बैठा हुआ निस्संकोच क्या कर रहा है–

(क) अखबार पढ़ रहा है (ख) टी०वी० देख रहा है
(ग) सिगरेट पी रहा है (घ) रेडियो पर गीत सुन रहा है।

2. अतिथि के ठीक सामने क्या है–

(क) पेंटिंग (ख) कैलेंडर
(ग) रसोईघर (घ) पूजा-गृह

3. अतिथि के आतिथ्य का आज कौन-सा दिन है–

(क) दूसरा (ख) तीसरा
(ग) चौथा (घ) पाँचवाँ।

4. लेखक अतिथि को दिखाकर कैलेंडर की तारीखें क्यों बदल रहा है–

(क) ताकि अतिथि तारीखें बदलना सीख जाए
(ख) ताकि अतिथि कैलेंडर देखना सीख जाए
(ग) ताकि अतिथि लेखक के घर ठहरने के दिनों का हिसाब लगा सके
(घ) ताकि अतिथि का मनोरंजन हो सके।

5. लेखक के अनुसार अतिथि अब तक क्या कर चुका है–

(क) वह लेखक से अंतरंग निजी संबंध स्थापित कर चुका है
(ख) उसने लेखक की आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली है
(ग) वह लेखक की काफ़ी मिट्टी खोद चुका है
(घ) उपर्युक्त सभी।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ के लेखक का क्या नाम है–

(क) रामविलास शर्मा (ख) यशपाल
(ग) शरद जोशी (घ) धीरंजन मालवे।

7. लेखक और अतिथि के बीच किन-किन विषयों पर चर्चा हुई–

(क) परिवार, बच्चे, नौकरी
(ख) फ़िल्म, राजनीति, रिश्तेदार
(ग) परिवार-नियोजन, महँगाई, पुरानी प्रेमिकाएँ
(घ) उपर्युक्त सभी।

8. लेखक की पत्नी ने अतिथि का स्वागत कैसे किया–

(क) चरणस्पर्श करके (ख) सादर नमस्ते करके
(ग) उपहार भेंट करके (घ) इनमें से कोई नहीं।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. एक अच्छे अतिथि की क्या विशेषता होती है?

10. लेखक के द्वारा किए गए अतिथि-सत्कार के उत्साह के मूल में क्या आशा थी?

11. होम को स्वीट-होम क्यों कहा गया है?

12. 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in